वर्ष : 2 अंक : 4, जनवरी–मार्च, 2012

पारस–परस

हिन्दी काव्य की समस्त विधाओं की प्रतिनिधि एवं संग्रहणीय अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिकी

नवजागरण विशेषांक

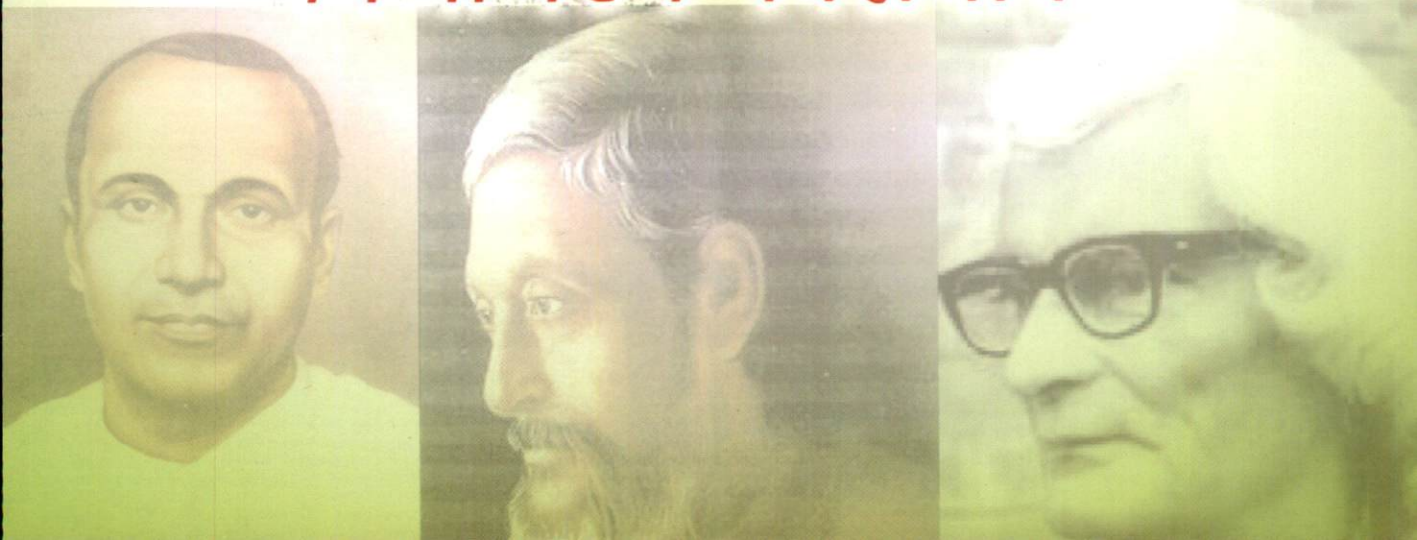

पारस-बेला स्मृति समारोह 2011
की कुछ झलकियाँ

वर्ष : 2, अंक : 4, जनवरी–मार्च, 2012

रजि. नं. यूपी एचआईएन/2011/39939

पारस-परस

नवजागरण विशेषांक

हिन्दी काव्य की समस्त विधाओं की प्रतिनिधि एवं संग्रहणीय अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिकी

अनुक्रमणिका

संरक्षक मंडल

डॉ. एल.पी. पाण्डेय;
अभिमन्यु कुमार पाठक;
अरुण कुमार पाठक;
राजेश प्रकाश;
डॉ. अशोक मधुप

प्रधान संपादक

डा॰ सुनील जोगी

संपादक

शिवकुमार बिलग्रामी

उप–संपादक

गार्गी शर्मा (एडवोकेट)

संपादकीय कार्यालय

418, मीडिया टाइम्स अपार्टमेंट
अभयखण्ड–चार, इंदिरापुरम
गाजियाबाद – 201012
फोन : 0120–2607558
मो. : 9868850099

लेआउट एवं टाइपसेटिंगः
आप्शन प्रिन्टोफास्ट,
पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया नई दिल्ली – 92

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा **प्रसून प्रतिष्ठान** के लिए **डॉ. अनिल कुमार पाठक** द्वारा **आप्शन प्रिन्टोफास्ट पटपड़गंज इन्ड. एरिया नई दिल्ली तथा 257, गोलागंज, लखनऊ** से मुद्रित एवं सी–49, बटलर पैलेस कॉलोनी, जॉपलिंग रोड़, लखनऊ से प्रकाशित ।

पारस–परस में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित रचनाकारों के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का रचनाओं में व्यक्त विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है । पत्रिका से संबंधित सभी विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होंगे। उपरोक्त सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।

संपादकीय — 2
पाठकों की पाती — 3

श्रद्धा सुमन

बाबू जी — *डॉ. अनिल कुमार पाठक* — 4

कालजयी

कल्पना से — *पं0 पारसनाथ पाठक 'प्रसून'* — 5
तुम में व्याप्त है — *स्वामी विवेकानन्द* — 6
जन–गण–मन — *रवीन्द्रनाथ टेगोर* — 7
हिमाद्रि तुंग श्रृंग से — *जयशंकर प्रसाद* — 8
भारती वन्दना — *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'* — 9
अलि, मैं कण–कण को जानचली — *महादेवी वर्मा* — 10
श्री सूर्यकांत त्रिपाठी के प्रति — *सुमित्रानंदन पंत* — 11
व्यंग्य मत बोलो — *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* — 12

समय के सारथी

नीरज गा रहा है — *गोपाल दास नीरज* — 13
नवगीत — *कुँअर बेचैन* — 14
आज समर में दुनिया सारी — *डा0 प्रवीण शुक्ल* — 15
जवान होते बेटो — *अष्टभुजा शुक्ल* — 16
एक आश्रम अशान्त — *दिविक रमेश* — 17
याद करो — *विकास परिहार* — 18
बिरवा — *डा0 अशोक 'अज्ञानी'* — 19
क्रांति पथ — *शिवशंकर वशिष्ठ* — 20
गीत — *राम मनोहर त्रिपाठी* — 21

प्रवासी के बोल

मौन मधुशाला — *चन्द्रशेखर त्रिवेदी* — 22
नई औरत — *पंखुरी सिन्हा* — 23
भूखे किसान — *महावीर शर्मा* — 24
पूर्णस्य पूर्णमादाय..... — *शार्दुला नागेजा* — 25

नारी स्वर

चिड़िया नहीं हूँ मैं — *प्रतिभा कटियार* — 26
प्यार पर बहुत हो चुकी कविताएं — *वंदना केंगरानी* — 27
कहो राम जी — *डा0 शांति सुमन* — 28
हाँ मैं औरत हूँ — *डा0 मधुरिमा सिंह* — 29
अलाव — *अरूणा घबाना* — 30
यादें सिर्फ यादें — *सुषमा लाल* — 31
बेटी — *अनू मित्तल* — 32

नवांकुर

युग परिवर्तन — *कौशलेन्द्र सिंह 'राष्ट्रवर'* — 33
निमंत्रण — *सरदार तुक तुक* — 34–35
संवेदना के स्वर — *अखिलेश त्रिवेदी 'शाश्वत'* — 36
टूट गये हैं सारे बंधन — *श्रेयस्कर गौड़* — 37
कुँअर बेचैन को पारस सम्मान — 38
अखबारों से..... — *पारस शिखर सम्मान* — 39

बालकोना

इंसाफ की डगर पे — *शकील बदायूँनी* — 40

संपादकीय

हिन्दी काव्य जगत में 'छायावाद' का महत्वपूर्ण स्थान है। छायावाद के पहले का रीतिकाव्य अपने स्वरूप और सरंचना दोनो दृष्टियों से प्रमुखतया रूढिबद्ध, श्रृंगारपरक और सामंतवर्ग का अनुरंजन करने वाला काव्य था। किंतु बाद में हिन्दी काव्य को जनता के साथ जोड़ने का प्रयास हुआ। इस काल में कविता के शिल्प और विषयवस्तु में आमूल–चूल परिवर्तन के साथ ही इसमें राष्ट्रीय चेतना का भाव प्रगाढतम होता गया। छायावाद के बारे में एक आम धारणा यह है कि यह महज सन्ध्या सुंदरी, चांदनी रात या फिर नौका विहार जैसी विषय वस्तुओं का शब्द–चित्रण मात्र है, पर ऐसा है नहीं। छायावाद मूलतः शक्ति का एक ऐसा काव्य है जिसमें नवजागरण या पुनर्जागरण चेतना का व्यापक और सूक्ष्म रूप विद्यमान है और यह अपनी अर्थ प्रक्रिया में मानव व्यक्तित्व को गहरे स्तरों पर समृद्ध करता है। इसलिए छायावाद को 'शक्ति काव्य' भी कहा जाता है। छायावाद की 'राम की शक्ति पूजा' और 'कामायनी' जैसी विशिष्ट रचनाओं में मूलतः नवजागरण की चेतना ही अंतर्व्याप्त है। नवजागरण के आंदोलन के पूर्व हर घटना, दुर्घटना के कार्यकरण संबंध में कारण ईश्वर केन्द्रित था, लेकिन नवजागरण के आंदोलन ने मनुष्य के कर्म को भी महत्ता प्रदान की ।

हिन्दी में छायावाद का मनश्चित्र बनाने में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द का बहुत बड़ा योगदान है, क्योंकि हिन्दी का छायावादी काव्य बंगला साहित्य व पुनजार्गरण आंदोलन से प्रभावित हुआ है। रवीन्द्रनाथ का काव्य और 'गीतांजली' जिस वातावरण का निर्माण करते हैं वह हिन्दी के छायावादी काव्य का एक पक्ष मात्र है, उसके केन्द्र में तो शक्ति चेतना का वह उत्स है जिसने भारतीय पुनर्जागरण को परिचालित किया। निराला सहित 'छायावाद चतुष्टय' के अन्य कवियों – 'प्रसाद','पंत' और महोदवी का काव्य – व्यक्तित्त्व उन्नीसवी सदी के बंगला काव्य से काफी प्रभावित था और इसीलिए छायावाद के इन कवियों की रचनाओं में नवजागरण की मुखर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इन्होने भारत के नवजागरण हेतु ऐसी कई प्रेरक और उद्‌बोधक रचनाओं का सृजन किया है जिन्हें हम इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं।

भारत में नवजागरण का शंखनाद करने वाले स्वामी विवेकानन्द और छायावाद चतुष्टय के तीन प्रमुख कवियों – प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा का जन्मदिन जनवरी–मार्च के कालखण्ड में आता है, अतएव इन काव्य नायकों के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम पारस–परस का यह अंक 'नवजागरण विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वर्गीय बाबू जी पं0 पारसनाथ पाठक 'प्रसून' की पुण्य तिथि 23 जनवरी, को है। प्रसून प्रतिष्ठान की ओर से हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

(संपादक)

आदरणीय संपादक जी,

पारस–परस का अक्तूबर–दिसम्बर, 2011 का अंक मिला । पत्रिका को देखकर मैं खुश भी था और चकित भी था । पत्रिका का 'गेट–अप' और कलेवर एकदम बदल गया है । इस बार के मां–विशेषांक में पत्रिका के मुखपृष्ठ पर जो 'मां' का 'स्केच' बना है वह स्केच पत्रिका में 'मां' पर प्रकाशित कविताओं से कहीं बेहतर और सशक्त ढंग से मां की अभिव्यक्ति करता है । ऐसा लगता है यह स्केच 'मां' पर लिखी गयी एक संपूर्ण कविता है । मैं इसके लिए आपको बहुत–बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं । इसके अतिरिक्त आपने सृजन–स्मरण के रूप में दिवंगत कवियों की फोटो और रचना के अंश छापकर उनके प्रति श्रद्धांजलि दी है यह साहित्य सेवा के प्रति आपके समर्पण को दर्शाता है । इसके लिए भी आपको साधुवाद ! मैं पारस–परस में प्रकाशित सभी कविताओं को कई–कई बार पढ़ता हूं । 'मां' पर लिखी इंदीवर की कविता बहुत ही अच्छी लगी, यद्यपि 'मां' पर लिखी गयी दूसरी कविताएं भी बहुत अच्छी हैं।

धर्मवीर सिंह
हरदोई

महोदय,

इस बार 'मां' पर आपने जो विशेषांक निकाला है वह सराहनीय है । इसमें मां पर आपने बड़ी स्तरीय और नयी कविताएं छापी हैं । 'अनाथ की मां' कविता पढ़कर तो मेरे आंसू ही आ गये । यह कविता संवेदना से ओत–प्रोत है । मैंने ऐसी भाव–प्रवण कविता पहले नहीं पढ़ी । इसी अंक में प्रकाशित लक्ष्मीकांत वर्मा की कविता एक मृतात्मा की वसीयत भी बहुत ही हृदय विदारक कविता है । पारसनाथ पाठक 'प्रसून' की रचना 'गीत की कड़ी' एक अलग अंदाज का गीत है और इसमें कई शिल्पगत प्रयोग है । गीत अच्छा लगा । आपने बालकोना में बच्चों का जो गीत दिया है, वह काफी अच्छा लगा । मेरा सुझाव है कि इसी तरह बच्चों के गीत और अधिक छापें । धन्यवाद ।

एस.सी. दीक्षित
नई दिल्ली ।

सूचना

पारस–परस के पाठकों और योगदानकर्त्ताओं के लिए एक खुश खबरी यह है कि 'प्रसून प्रतिष्ठान प्रबंधन' ने स्वर्गीय पारसनाथ पाठक 'प्रसून' की स्मृति में एक 'प्रसून प्रोत्साहन पुरस्कार' शुरू करने का निर्णय लिया है। इस पुरस्कार की राशि 1100 रूपये नकद है। यह पुरस्कार प्रत्येक अंक में प्रकाशित किसी ऐसी उत्कृष्ट रचना को दिया जायेगा जिसमें काव्य का मर्म और धर्म समाहित हो और जो काव्य की कसौटी पर खरी उतरती है। यदि एक से अधिक रचनाएं पुरस्कृत करने योग्य पायी गयीं तो राशि को तद्नुसार विभक्त कर दिया जायेगा।

पुरस्कार के बारे में अंतिम निर्णय प्रसून प्रतिष्ठान प्रबंधन का होगा और इस बारे में प्रबंधन के निर्णय को चुनौती नहीं दी जा सकती।

रचनाकार अपनी रचनाएं कृपया निम्नलिखित पते पर भेजें–

संपादक : पारस–परस
418, मीडिया टाइम्स अपार्टमेंट
अभय खण्ड–चार, इंदिरापुरम
गजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
email : paarasparas.pathak@gmail.com

बाबू जी

(पुण्य तिथि 23 जनवरी पर)

– डॉ0 अनिल कुमार पाठक

बाबू जी को 'याद करें' ।
क्या भूल गये ? जो 'याद करें' ।

हर पल, बीत गया जो कल,
आज तथा आगामी कल,
भूले नहीं कभी जब उनको,
तब कैसा ? यह 'याद करें ' ।
बाबू जी को 'याद करें' ।
क्या भूल गये ? जो 'याद करें ' ।

रक्त शिराओं में है उनका,
हर श्वास–सूत्र भी है उनका,
सब केवल औ' केवल उनका,
तब क्यूं ? कलरव–नाद करें ।
बाबू जी को 'याद करें ' ।
क्या भूल गये ? जो 'याद करें ' ।

जो कुछ भी है, इस तन–मन में,
बाहर–भीतर, घर–आंगन में,
सम्बद्ध सभी कुछ उनसे ही,
तब क्या ? किससे फ़रियाद करें' ।
बाबू जी को 'याद करें' ।
क्या भूल गये ? जो 'याद करें' ।

और यह क्या तुम सुनते नहीं
विधाता का मंगल वरदान
'शक्तिशाली हो, विजयी बनो'
विश्व में गूंज रहा जयगान
(प्रसाद की 'कामायनी' से)

कल्पना से

– पं0 पारसनाथ पाठक 'प्रसून'

कल्पने ! जू जाग जा, अब भावना में रंग भर दे ।
द्वेष, द्रोहों, द्रोहियों का लेखनी से ध्वंस कर दे ।।

दूर कर दे उस निशा को, ध्रुव निशा सी बन गई जो,
पाप–पाखंडों–पतन से, दीप मेरे हर गई जो ।

फिर से हमारी–सृष्टि में तू दीप तारों के जला दे ,
कर दे दिवाली आज फिर से वेणु वृंदा में बजा दे ।

सुप्त सोयेगी कहां तक है कहां तेरा सवेरा,
जगा कर ही क्या करेगी, हो रहा विजयी अँधेरा ।

क्या तुम्हें भी भा रहा है, विश्व का यह भाव–खंडन,
भूख से व्याकुल तड़पते, बालकों का क्षुब्ध क्रन्दन ।

यदि नहीं तो आज फिर से, क्रान्ति का सरगम बजा दे,
प्रेम की एक भावना से, शुष्क धरती को सजा दे ।

विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण
हे पुरुष सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर

(निराला की 'राम की शक्ति पूजा' से)

तुममें व्याप्त है, उसी की अराधना करो

– स्वामी विवेकानन्द

वह, जो तुममे है और तुमसे परे भी,
जो सबके हाथों में बैठकर काम करता है,
जो सबके पैरों में समाया हुआ चलता है,
जो तुम सब के घट में व्याप्त है,
उसी की अराधना करो और
अन्य सभी प्रतिमाओं को तोड़ दो ।

जो एक साथ ही ऊंचे पर और नीचे भी है,
पापी और महात्मा, ईश्वर और निकृष्ट कीट,
एक साथ ही हैं,
उसी का पूजन करो–जो दृश्यमान है,
जय है, सत्य है । सर्व व्यापी है,
अन्य सभी प्रतिमाओं को तोड़ दो ।

जो अतीत जीवन से मुक्त
भविष्य के जन्म–मरणों से परे है,
जिसमें हमारी स्थिति है और
जिसमें हम सदा स्थित रहेंगे,
उसकी अराधना करो,
अन्य सभी प्रतिमाओं को तोड़ दो ।

ओ विमूढ़ ! जाग्रत देवता की उपेक्षा मत करो,
उसके अनंत प्रतिबिंबों से यह विश्वपूर्ण है,
काल्पनिक छायाओं के पीछे मत भागो,
जो तुम्हें विग्रहों में डालती है,
उस परम प्रभु की उपासना करो,
जिसे सामने देख रहे हो,
अन्य सभी प्रतिमाओं को तोड़ दो ।

(यह कविता बंगला से हिन्दी भाषा में अनूदित है)

जन–गण–मन

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

(गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाएं दो देशों अर्थात् भारत और बांग्लादेश में राष्ट्रगान के रूप में अपनायी गयी हैं । इस रचना का प्रथम भाग भारत के राष्ट्रगान के रूप में अपनाया गया है । भारत में नव जागरण काल की शुरुआत वस्तुतः बंगाली साहित्य से हुई जिसे बाद में हिन्दी काव्य में भी अपनाया गया । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को भारत में नवजागरण काल का प्रणेता कवि कहा जा सकता है)

जन–गण–मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे

पतन–अभ्युदय–वन्धुर–पंथा,
युगयुग धावित यात्री,
हे चिर–सारथी,
तव रथ चक्रेमुखरित पथ दिन–रात्रि
दारुण विप्लव–माझे
तव शंखध्वनि बाजे,
संकट–दुख–श्राता,
जन–गण–पथ–परिचायक जय हे
भारत–भाग्य–विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे

घोर–तिमिर–घन–निविड.–निशीथ
पीड़ित मूर्च्छित–देशे
जाग्रत दिल तव अविचल मंगल
नत नत–नयने अनिमेषे
दुस्वप्ने आतंके
रक्षा करिजे अंके
स्नेहमयी तुमि माता,
जन–गण–दुखत्रायक जय हे
भारत–भाग्य–विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से

— जयशंकर प्रसाद

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,
प्रबुद्ध शुद्ध भारती–
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती–

'अमर्त्य वीर–पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।'

असंख्य कीर्ति–रश्मियां,
विकीर्ण दिव्य दाह–सी
सपूत मातृभूमि के
रुको न शूर साहसी !

अराति सैन्य सिन्धु में सुबाड़वाग्नि से जलो !
प्रवीर हो जयी बनो–बढ़े चलो, बढ़े चलो !

निवेदन

पारस–परस पूरी तरह से एक गैर–व्यावसायिक पत्रिका है । इसका एकमात्र उद्देश्य काव्य के माध्यम से हिन्दी कवियों के पैगाम को जन–जन तक पहुंचाना है । इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के साथ रचनाकारों का नाम और उनसे संबंधित उचित जानकारी दी जाती है जिससे रचनाकार को उचित श्रेय मिलता है । इतना ही नहीं, हम प्रत्येक रचना के प्रकाशन से पूर्व संबद्ध रचनाकार से लिखित/मौखिक अनुमति का भी भरसक प्रयास करते हैं । फिर भी यदि किसी रचनाकार/कॉपीराइट धारक को कोई आपत्ति है तो उनसे अनुरोध है कि वह हिन्दी काव्य के प्रचार–प्रसार को ध्यान में रखते हुए, इस पत्रिका के योगदानकर्त्ताओं से हुई भूलवश गलती को क्षमा कर दें। यदि कॉपीराइटधारक को कोई आपत्ति है तो कृपया paarasparas.pathak@gmail.com पर सूचित कर दें ताकि पत्रिका के आगामी अंकों में उनकी रचनाएं प्रकाशित करने से पूर्व लिखित अनुमति सुनिश्चित की जा सके और इस संबंध में आवश्यक पहलुओं को ध्यान में रखा जा सके ।

इस कार्य को प्रसून–प्रतिष्ठान द्वारा जन–जागरुकता और जनहित की दृष्टि से किया जा रहा है । पत्रिका को शुभेच्छुओं तथा प्रसून–प्रतिष्ठान के सदस्यों में निःशुल्क वितरित किया जाता है ।

भारती–वन्दना

–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

भारति, जय, विजय करे
कनक–शस्य–कमल धरे !

लंका पदतल–शतदल,
गर्जितोर्मि सागर–जल
धोता शुचि चरण–युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे !

तरु–तृण वन–लता–वसन
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल–कण
धवल–धार हार गले !

मुकुट शुभ्र हिम–तुषार
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएं उदार,
शतमुख–शतरव–मुखरे !

पुष्प–पथों पर कांटे बिखरे
मिले हमें क्यूँ जख्म ये गहरे
रोयें बिलखें सभी आत्मजन
तेरा जाना सबको अखरे
डा0 अनिल कुमार पाठक

अलि, मैं कण–कण को जान चली

–महादेवी वर्मा

अलि, मैं कण–कण को जान चली
सबका क्रन्दन पहचान चली

जो दृग में हीरक–जल भरते
जो चितवन इन्द्रधनुष करते,
टूटे सपनों के मनकों से
जो सूखे अधरों पर झरते,

जिस मुक्ताहल में मेघ भरे,
जो तारों के तृण में उतरे,
मैं नभ के रज के रस–विष के
आंसू के सब रंग जान चली !

जिसका मीठा–तीखा दंशन,
अंगों में भरता सुख–सिहरन,
जो पग में चुभकर, कर देता
जर्जर मानस, चिर आहत मन,

जो मृदु फूलों के स्पन्दन से,
जो पैना एकाकीपन से,
मैं उपवन निर्जन पथ के हर
कंटक का मृदु मत जान चली ।
गति का दे चिर वरदान चली ।

जो जल में विद्युत–प्यास भरा
जो आतप में जल–जल निखरा,
जो झरते फूलों पर देता
निज चन्दन–सी ममता बिखरा;

जो आँसू में धुल–धुल उजला;
जो निष्ठुर चरणों का कुचला,
मैं मरु उर्वर में कसक भरे
अणु–अणु का कम्पन जान चली,
प्रति पग को कर लयवान चली !

नभ मेरा सपना स्वर्ण रजत
जग संगी अपना चिर विस्मित
यह शूल–फूल कर चिर नूतन
पथ, मेरी साधों से निर्मित,

इन आँखों के रस से गीली
रज भी है दिव से गर्वीली
मैं सुख से चंचल दुख–बोझिल
क्षण–क्षण का जीवन जान चली !
मिटने को कर निर्माण चली !

मैं अगर ख़ामोश था तो क्या हुआ
तू किताबों की तरह पढ़ता मुझे

सर्वेश 'चन्दौसवी'

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी के प्रति

– सुमित्रानंदन पंत

छंद बंध ध्रुव तोड़, फोड़ कर पर्वत कारा
अचल रूढ़ियों की, कवि ! तेरी कविता धारा
मुक्त अबाध अमद रजत निर्झर–सी निःसृत–
गलित ललित आलोक राशि, चिर अक्लुष अविजित !
स्फटिक शिलाओं से तूने वाणी का मंदिर
शिल्पि, बनाया, – ज्योति कलश निज यश का घर चित्त ।
शिलीभूत सौन्दर्य ज्ञान आनंद अनश्वर
शब्द–शब्द में तेरे उज्जवल जड़ित हिम शिखर ।
शुभ्र कल्पना की उड़ान, भव भास्वर कलरव,
हंस, अंश वाणी के, तेरी प्रतिभा नित नव;
जीवन के कर्दम से अमलिन मानस सरसिज
शोभित तेरा, वरद शारदा का आसन निज ।
अमृत पत्र कवि, यशःकाय तव जरा–मरणजित,
स्वयं भारती से तेरी हृतंत्री झंकृत ।

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को छायावादी काव्य में 'शक्ति–काव्य', के उन्नेता कवि के रूप में जाना जाता है । निराला जी ने न केवल कविता के शिल्प विधान में अपितु उसकी विषय–वस्तु में भी आमूल–चूल परिवर्तन किये । निराला जी के व्यक्तित्व के कुछ इन्हीं पहलुओं पर समित्रानंदन पंत ने अपनी इस कविता के माध्यम से प्रकाश डाला है ।)

ज़रा सा क़तरा कहीं, आज गर उभरता है
समंदरो ही के लहजे में बात करता है
खुली छतों के दिये कब के बुझ गये होते
कोई तो है जो हवाओं के पर क़तरता है

वसीम बरेलवी

व्यंग्य मत बोलो

– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

व्यंग्य मत बोलो ।
काटता है जूता तो क्या हुआ
पैर में न सही
सिर पर रख डोलो ।
व्यंग्य मत बोलो ।

अंधों का साथ हो जाये तो
खुद भी आंखें बंद कर लो
जैसे सब टटोलते हैं
राह तुम भी टटोलो ।
व्यंग्य मत बोलो ।

क्या रखा है कुरेदने में
हर एक का चक्रव्यूह कुरेदने में
सत्य के लिए
निरस्त्र टूटा पहिया ले
लड़ने से बेहतर है
जैसी है दुनिया
उसके साथ हो लो
व्यंग्य मत बोलो ।

भीतर कौन देखता है
बाहर रहो चिकने
यह मत भूलो
यह बाज़ार है
सभी आए हैं बिकने
राम राम कहो
और माखन मिश्री घोलो ।
व्यंग्य मत बोलो ।

नीरज गा रहा है

– गोपालदास ''नीरज''

अब जमाने को खबर कर दो कि 'नीरज' गा रहा है
जो झुका है वह उठे अब सर उठाए,
जो रुका है वह चले नभ चूम आए,
जो लुटा है वह नए सपने सजाए,
जुल्म–शोषण को खुली देकर चुनौती,
प्यार अब तलवार को बहला रहा है ।
अब जमाने को खबर कर दो कि 'नीरज' गा रहा है

हर छलकती आँख को वीणा थमा दो,
हर सिसकती साँस को कोयल बना दो,
हर लुटे सिंगार को पायल पिन्हा दो,
चाँदनी के कंठ में डाले भुजाएँ,
गीत फिर मधुमास लाने जा रहा है ।
अब जमाने को खबर कर दो कि 'नीरज' गा रहा है ।

जा कहो तम से करे वापस सितारे,
माँग लो बढ़कर धुएँ से अब अंगारे,
बिजलियों से बोल दो घूँघट उघारे,
पहन लपटों का मुकुट काली धरा पर,
सूर्य बनकर आज श्रम मुसका रहा है ।
अब जमाने को खबर कर दो कि 'नीरज' गा रहा है ।

शोषणों की हाट से लाशें हटाओं,
मरघटों को खेत की खुशबू सुँघाओं,
पतझरों में फूल के घुँघरु बजाओ,
हर कलम की नोक पर मैं देखता हूँ,
स्वर्ग का नक्शा उतरता आ रहा है ।
अब जमाने को खबर कर दो कि 'नीरज' गा रहा है ।

इस तरह फिर मौत की होगी न शादी,
इस तरह फिर खून बेचेगी न चाँदी,
इस तरह फिर नीड़ निगलेगी न आँधी,
शांति का झंडा लिए कर में हिमालय,
रास्ता संसार को दिखला रहा है ।
अब जमाने को खबर कर दो कि 'नीरज' गा रहा है ।

नवगीत

(कुँअर बेचैन वर्तमान दौर के सर्वाधिक चर्चित कवियों में सें एक है। यूं तो उन्होने काव्य की हर विधा में रचना की है परन्तु उन्हें मुख्यतः गीतों और नवगीतों के सिद्धहस्त कवि के रूप में जाना जाता है। उन्हें हाल ही में वर्श 2011 के पारस–शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया है।)

बिके अभावों के हाथों

मन बेचारा एकवचन
लेकिन
दर्द हजार गुने ।
चॉदी की चम्मच लेकर
जन्में नहीं हमारे दिन
अंधियारी रातों के घर
रह आए भावुक पल–छिन
चंदा से सौ बातें कीं
सूरज ने जब घातें कीं
किंतु एक नक्कारगेह में
तूती की ध्वनि
कौन सुने ।
बिके अभावों के हाथों
सपने खील–बताशों के
भरे नुकीले शूलों से
आंगन –
खेल तमाशों के
कुछ को चूहे काट गए
कुछ को झींगुर चाट गए
नए–नए संकल्पों के
जो भी हमने जाल बुने ।

भारी–भारी तोपे हैं

– कुँअर बेचैन

ऑफिस के
दरवाजों पर
कौन कह रहा चपरासी ?
भारी–भारी तोपें हैं ।
कुछ कागज के
नोटों से
इनके मुंह खुल जाते हैं
वज़न कुर्सियों के,
इनकी बातों से
तुल जाते हैं
रिश्वतखोरी के
घर से
इनके बड़े ''घरोपे'' हैं ।
भारी–भारी तोपें हैं ।
लौटा दिया
इन्होंने ही
लंबी–चौड़ी
भीड़ों को
ये जेबों में
रखते हैं
ज़हर–उगलते
कीड़ों को
भीतर ज़्वालामुखी अचल
बाहर चंदन थोपे हैं ।
भारी–भारी तोपें हैं ।

संपर्कः 2 एफ, 51,
नेहरु नगर, गाजियाबाद

आज समर में दुनिया सारी

– डा0 प्रवीण शुक्ल

(डा0 प्रवीण शुक्ल हिन्दी काव्य जगत के जाने माने युवा स्वर हैं। इन्हें वर्श 2011 के स्वर बेला युवा सम्मान से सम्मानित किया गया है।)

अपने–अपने हित के कारण
आज समय में दुनिया सारी
केवल स्वार्थों की ख़ातिर ही
क्यों करती रण की तैयारी

गिरते ही इक एटम बम के
नष्ट हो गया नागासाकी
हिरोशिमा की धरती पर भी
बचा नहीं इक पत्ता बाकी
लेकिन उससे भी घातक बम
वैज्ञानिक अब रोज़ बनायें
पता नही केवल क्षण भर में
कितने नगर नष्ट हो जायें
जब एटम बम बना लिए तो
निश्चित ही होगी बमबारी
आज समर में दुनिया सारी
क्यों करती रण की तैयारी

काल–पृष्ठ पर लिखी हुई जो
वह बरबादी दीख न पायी
युद्ध महाभारत का देखा
फिर भी हमने सीख न पायी
जो हारे उनके सीने में
भाला और तीर धँसता था
लेकिन जो जीते उनके भी
आगे बस हिम का रस्ता था
बर्छी, भाले टकराने से
सदा भड़कती है चिंगारी
आज समर में दुनिया सारी
क्यों करती रण की तैयारी

ओछी राजनीति की ख़ातिर
जिनके निर्णय बने सुमेरू
जिनकी धूल–भरी आँधी में
उड़े किसी के प्राण पखेरू
वे सीमा पर जाकर देखें
जाति नहीं गोली की होती
अपनी हो या किसी और की
विधवा तो जीवन भर रोती
दुख सबका दुख ही होता है
चाहे हल्का हो या भारी
आज समर में दुनिया सारी
क्यों करती रण की तैयारी

युद्ध जीतकर मिलता भी क्या ?
एक ज़रा–सा भू का हिस्सा
लेकिन उसके साथ जुड़ेगा
बरबादी का पूरा क़िस्सा
जीवन में नफ़रत को छोड़ें
आओ सबसे प्रेम बढ़ाएँ
जिस कारण यह जन्म मिला है
उस कारण को भूल न जाएँ
हम सारी दुनिया के होवें
सारी दुनिया बने हमारी
आज समर में दुनिया सारी
क्यों करणी रण की तैयारी

संपर्कः 4649 15 ए,
न्यू माडर्न शाहदरा
दिल्ली – 32

जवान होते बेटो !

– अष्टभुजा शुक्ल

जवान होते बेटो !
इतना झुकना
इतना
कि समतल भी खुद को तुमसे ऊंचा समझे
कि चींटी भी तुम्हारे पेट के नीचे से निकल जाए
लेकिन झुकने का कटोरा लेकर मत खड़े होना घाटी में
कि ऊपर से बरसने के लिए कृपा हंसती रहे

इस उमर में
इच्छाएं कंचे की गोलियाँ होती हैं
कोई कंचा फूट जाए तो विलाप मत करना
और कोई आगे निकल जाए तो
तालियाँ बजाते हुए चहकना कि फूल झरने लगें

किसी को भीख न दे पाना तो कोई बात नहीं
लेकिन किसी की तुमड़ी मत फोड़ना
किसी परेशानी में पड़े हुए की तरह मत दिखाई देना
किसी परेशानी से निकल कर आते हुए की तरह दिखना
कोई लड़की तुमसे प्रेम करने को तैयार न हो
तो कोई लड़की तुमसे प्रेम कर सके
इसके लायक खुद को तैयार करना
जवान होते बेटो !

इस उमर में संभव हो तो
घंटे दो घंटे मोबाइल का स्विच ऑफ रखने का संयम बरतना
और इतनी चिकनी होती जा रही दुनिया में
कुछ खुरदुरे बने रहने की कोशिश करना

जवान होते बेटो !
जवानी में न बूढ़ा बन जाना शोभा देता है
न शिशु बन जाना
यद्यपि बेटो
यह उपदेश देने का ही मौसम है
और तुम्हारा फर्ज है कोई भी उपदेश न मानना.....

(श्री अष्टभुजा शुक्ला उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला के रहने वालें है। अब तक इतने कई कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।)

एक आश्रम अशान्त

– दिविक रमेश

एक शान्त जलधारा है
एक शान्त किनारा है
मंदिर में गूंज रहा
घंटा भी शान्त है
मंत्र उच्चार रहे
भक्त भी शान्त हैं
बोलते भी शान्त हैं
हँसते भी शान्त हैं
प्रश्न सब शान्त हैं
उत्तर सब शान्त हैं

शान्त हैं
धरती से जुड़ी तमाम वनस्पतियां
शान्त हैं
आकाश को ताकते तमाम वृक्ष
कलरव भी शान्त है
शान्त है आवाज भी
शान्त हर ओर है
शान्त सब शोर है
शान्त आसपास है
क्षितिजों तक
बस शान्त ही शान्त है

तो फिर
रहना अशान्त मेरा
क्या नहीं है अनुचित ?
खोजता हूं तो पाता हूं
एक मरियल सी जिज्ञासा है
एक लकीर सी शंका है
एक गर्दन उठाए स्वार्थ है
एक अनुभवहीन तर्क है
एक अहंकारी श्रद्धा है
एक चाटुकार विनय है
खोने में पाना है
देने में लेना है
शब्दों में शोर है
आवाज में भीड़ है
चिन्तन में चीर है
लालच के ढूंह पर
बैठा फकीर है ।
शान्त को भीतर से
खाता हुआ अशान्त है ।

चुप भी अशान्त है
सब कुछ अशान्त है ।

हम ऐसी कुल किताबें क़ाबिले ज़ब्ती समझते हैं
कि जिनको पढके बच्चे बाप को खब्ती समझते हैं
अकबर इलाहाबादी

याद करो

– विकास परिहार

देशवासियों याद करो तुम
उन महान बलिदानों को ।
देश के खातिर जान लुटाई,
देश की उन संतानों को ।

जिनके कारण तान के छाती
खड़ा यह पर्वतराज है ।
जिनके चलते सबके सर पर
आज़ादी का ताज है ।
महाकाल भी कांपा जिनसे
मौत के उन परवानों को ।
देश वासियों याद करो....

देख कर टोली देव भी बोले
देखो–देखो वीर चले ।
गर पर्वत भी आया आगे,
पर्वत को वो चीर चले ।
जिनसे दुश्मन डर कर भागे
ऐसे वीर जवानों को ।
देश वासियों याद करो...

जिनने मौत का गीत बजाया
अपनी सांसों की तानों पर ।
पानी फेरा सदा जिन्होंने
दुश्मन के अरमानों पर ।
मेहनत से जिनने महल बनाया
उजड़े हुए वीरानों को ।
देश वासियों याद करो.....

हंस–हंस कर के झेली गोली
जिन्होंने अपने सीनों पर ।
अंत समय में सो गए जो
रख कर माथा संगीनों पर ।
शत–शत नमन कर रहा है
मन मेरा ऐसे दीवानों को ।
देश वासियों याद करो....

बिरवा

– डॉ0 अशोक 'अज्ञानी'

ई बिरवा बड़े नीकि लागैं ।

बिरवन की छांही मा खेली
छांही मइहा जियरा जुड़ाय ।
जब चलै बयारि सनन सननन
बिरवा खुद गाना गुनगुनाय ।
दुपहरिया मा हरहा बइठैं
चरवाहा लइ खावै रोटी ।
छुट्टी के मौका मा हमहू
इनके नीचे लोटी–पोटी ।
मइया के अचरा जस इनकी
छाहीं मा नेहु बड़े जागै ।।

महुआ, गुलरी, अमरूद, आम
भावै इनके फल के मिठास ।
लरिकन का बहुत नीकिलागै
नबुआ और इमली के खटास ।।
लरिकन का झुलुवा झुलवावैं
गांवन मइहा बरगद दादा ।
पातिन की खरभर–खरभर ते
जिउ डेरवावैं पीपर बाबा ।
कुछु अइसि करौ भुइया देवता
मनइन के मन के डेरु भागैं ।।

बिरवन की झूरी लकड़ी ते
हैं अम्मा बना रही खाना ।
इनही ते बनी जउनि लाठी
वह टेकि चलै हमरे नाना ।
हमहू विद्यालय पढ़ै जाइ
इनकी लकड़ी कै लइ पाटी ।
इनका ना करो विनास कोऊ
इनके उपकारी परिपाटी
हमरिउ रच्छा तो करौ तिनुकु
ई बिरवा यहै भीख मांगैं ।।

संपर्कः राजकीय हुसैनाबाद इण्टर
कॉलेज चौक, लखनऊ

क्रांति पथ

– शिवशंकर वशिष्ठ

मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर !
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर !
मैंने यौवन बिकते देखा गलियों में औ, बाज़ारों में
मैंने मानवता को देखा नत चांदी की मीनारों में;
मज़हब के दीवाने देखे आपस मे लड़ते कट मरते,
मस्जिद के हामी अल्लाहो, मन्दिरवाले हर–हर करते;
देवालय की प्रतिमाओं में भूखा नंगा मानव देखा,
मस्जिद के साये में बैठे नर कंकालों का दल देखा;
एक चाह लिये, एक आह लिए, नयनों से झरता था निर्झर ।
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर !
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर !
निर्धन नारी की सुन्दरता अभिशापित होते भी देखी,
भोली ललनाओं की चोली अंगारों में जलते देखी;
जन पद कल्याणी को देखा एक हूक लिए, शृंगार किये,
तन में समाज का कोढ़ भरे, मानस में मधुर दुलार लिये;
मज़दूर किसानों को देखा पूंजी के शोषण में पिसते,
अपने जीवन की बाज़ी को नाकामी में ढकते–रिसते;
युग संघर्षों की छाया में बढ़ता जाता प्रति–दिन सत्वर ।
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर !
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर !

(उत्तर प्रदेश के चन्दौसी, जिला मुरादाबाद में जन्में श्री शिवशंकर वशिष्ठ संप्रति मुबंई में एक साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संस्था 'समन्वय' के संचालक है।)

गीत

– राममनोहर त्रिपाठी

तकलीफ़ों के बाद तनिक आराम है
तुम कहते हो गीतों से क्या काम है ?
गीतों का बादल मुझको नहलाता है
स्वर का गुंजन घावों को सहलाता है
यह हर दुःख में मेरा मन बहलाता है
मेरा जीना ही इस का परिणाम है ।
तुम कहते हो गीतों से क्या काम है ?
यही सोचकर तुम को भी हैरानी है
जो दुखियारा है मेरा पहचानी है
सब से परिचित मेरी राम कहानी है
मेरे लिए यही पैसा है दाम है ।
तुम कहते हो गीतों से क्या काम है ?
भावुकता के वेश हज़ारों धरता हूं
मधुऋतु–सा खिलकर पतझर–सा झरता हूं
ध्यान लगाकर स्वर की पूजा करता हूं
गीतों के मंदिर में मेरा राम है ।
तुम कहते हो गीतों से क्या काम है ?

(उत्तर प्रदेश के रायबरेली में जन्में श्री राममनोहर त्रिपाठी की कर्मभूमि मुंबई रही है। आप मुंबई से नगर–निगम के पार्षद भी रह चुके है। आप मुंबई के सामाजिक, सांस्कृतिक और सहित्यिक जीवन से जुड़े हैं।)

मौन मधुशाला

– चन्द्रशेखर त्रिवेदी (अमेरिका से)

सुन कर मची सनसनी स्वर्ग में,
कैसा कवि हाला वाला ।
मदिरालय का गान सुनाता,
साथ लिए साकी बाला।
सबको अब भविष्य की चिन्ता,
कैसा दिन आने वाला।
यही रहा तो खुल जाएगी,
गली गली में मधुशाला ।।

आदि समय से रही छलकती,
स्वर्गलोग में थी हाला।
सुर, किन्नर, गन्धर्व, अप्सरा,
ने छक कर कितना ढाला।
बच्चन के आने के पहले,
सिर्फ नशा ही होता था।
वातावरण नहीं था कोई,
आज खुली है मधुशाला ।।

स्वर्गालय में धूम मची है,
नाच रही है सुरबाला।
देखो सुन्दर गीत सुनाने,
आया कवि हाला वाला।
अब तो जश्न मनेगा ऊपर,
शब्द मधुर मुखरित होंगे।
बच्चन तुम क्या गए धरा से,
मौन हमारी मधुशाला ।।

मुरझाई अंगूर लताएं,
कहां बची इनमें हाला।
झोंक समय की खा कर देखो,
टूट गया मधु का प्याला।
बन्द कपाट, किवाड़, सींखचे,
दरवाजे लटका ताला।
गाने वाला चला गया अब,
बन्द हुई बस मधुशाला ।।

(श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी संयुक्त राज्य अमेरिका के इलिनाय राज्य के साउथ हॉलैण्ड शहर में सिविल इंजीनियर हैं)

नई औरत

– पंखुरी सिन्हा (अमेरिका से)

वह क्षण भर भी नहीं
उसका एक बारीक़–सा टुकड़ा था बस,
जब लगाम मेरे हाथ से छूट गई थी,
और सारी सड़क की भीड़ के साथ–साथ
गाड़ियों के अलग–अलग हार्न की मिली जुली
चीख़ के बीचोंबीच,
अचानक ब्रेक लगने से घिसटकर रुकते टायरों के नीचे से,
लाल हो गई ट्रैफिक की बत्ती के ऊपर से,
चील की तरह, बाज की तरह,
तुम भी मेरे खुले कंधों पर झपट पड़े थे,
मैं दिखाऊंगी नहीं तुम्हे,
पर मेरे कंधों पर तुम्हारे पंजों की खरोंच के निशान हैं,
सिर्फ इसलिए कि ये तुम्हारे दिए हुए निशान हैं ?
नहीं, मैं बताऊंगी नहीं तुम्हें,
पर मैं धो रही हूं इन्हें,
दूब की नर्मी से,
ओस की ठंडक से,
धो रही हूं तुम्हारे खुरों के निशान,
अपने कंधों पर से
दुर्घटना सड़क पर नहीं, मेरे अन्दर घटी है,
पर मैं बताऊंगी नहीं तुम्हें
अब तुम मेरे राजदार नहीं रहे....

संपर्क: 3 Rachel Court
Amherst New York- 14228

भूखे किसान

– महावीर शर्मा

मुश्किल भूखों का जीना है !!
मेहनत करके निज हाथों से, बेचारे खेत उगाते हैं,
वर्तमान के कष्टों को, मुस्का मुस्का कर सहते हैं,
केवल भावी की आशा में, दो दो दिन भूखे रहते हैं,
पकने पर फ़सल बना सोना, उनका बहुमूल्य पसीना है ।

मुश्किल भूखों का जीना है !!

खलिहानों में निज फ़सल देख वह खड़ा खड़ा मुस्कुराता है,
सूद़खोर गाड़ी में भर कर, फ़सल साथ ले जाता है,
यू ही सूरज चला गया, पूनम का चांद निकल आया,
उसे लगा यह चांद नहीं, कोई गोल गोल रोटी लाया,
एक काले बादल ने आकर, उस रोटी को भी छीना है ।

मुश्किल भूखों का जीना है !!

पीते हैं कुत्ते दूध कहीं, पर वह भूखा चिल्लाता है,
ऊंचे महलों के नीचे वह, कुटिया में रात बिताता है,
भूखा रहने के कारण उसकी, आंख नहीं लग पाती है,
यदि आंख लगे तो सपने में, बिल्ली रोटी ले जाती है,
इस डर से सोता नहीं रात भर, केवल आंसू पीना है ।

मुश्किल भूखों का जीना है !!

संपर्क: 7 Hall Street
London N12 8DB
England

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

– शार्दुला नागेजा (सिंगापुर से)

हर एक पग जो मैं चला था
वह तेरे पथ ही गया था,
ज्ञात ना गन्तव्य था पर
लक्ष्य आ खुद सध गया था ।

तू ही है मनमीत मेरा
तू ही मेरा प्राणधन,
कस्तूरी मृग सा मैं भटकता
तू है गंधवाही पवन ।

तू रहे किस काल में
किस देश में, किस भेस में,
इसकी नहीं परवाह करता
तुझ से विलग ना शेष मैं !

विश्वशांति में तुझ को पुकारे
बाट संजोये सदा
वो खोज मैं, मैं वो प्रतीक्षा
मैं वो चातक की व्यथा ।

द्वंद जिसने भी लड़ा था
और जो लिखा–गढ़ा था,
वो तेरे ही द्वार की
एक–एक कर सीढ़ी चढ़ा था ।

आज जब मैं पास हूं
क्यों मुझ से तू मुख फेरता,
मैं न हरकारा कोई
जो जाये घर–घर टेरता ।

मैं तेरे संग बोल लूँ
तुझको तुझी से तोल लूँ
मैं तेरा ही अंश प्रियतम
क्या पूर्ण का मैं मोल दूँ

(शार्दुला नागेजा का जन्म बिहार के जिला मधुबनी में हुआ है । संप्रति वह सिंगापुर में कार्यरत हैं। आपने जर्मनी से कम्प्यूटेशनल इंजीनियरिंग में एम.एस. की उपाधि हासिल की है ।
आपका ई–मेल– shar-J-n@yahoo.com)

चिड़िया नहीं हूँ मैं

– प्रतिभा कटियार

चिड़िया नहीं हूँ मैं
कि आएगा कोई आखेटक
बिछा देगा जाल
और फँस जाऊँगी मैं ।

धरती नहीं हूँ मैं कि
दुनिया भर के अवसाद
तकलीफ़ें समाकर अपने भीतर
लहराती रहूँगी सदा ।

आसमान नहीं हूँ मैं
कि सिर्फ़ देखती रहूँ दूर से
सब कुछ होते हुए
कर न सकूँ कुछ भी ।

डरो नहीं, आग भी नहीं हूँ मैं
कि लगाओगे हाथ
और जल जाओगे तुम ।

नेह की एक बूँद हूँ
जो नेह से पिघल जाती है
बादल बनकर बरस जाती है
पूरी धरती पर, समंदर पर
दरख़्तों पर
कायनात के इस छ़ोर से
उस छ़ोर तक
नेह ही नेह...

संपर्कः 2, मानस नगर कॉलोनी
जियामऊ, हजरतगंज, लखनऊ

प्यार पर बहुत हो चुकी कविताएँ

– वंदना केंगरानी

प्यार पर बहुत हो चुकी कविताएँ
पिता की फटी बिवाइयों पर
अभी तक नहीं लिखी कविताएँ
जो रिश्ता ढूँढते–ढूँढते टूटने पर कसकते हैं

नहीं पढ़ी गई कविताएँ
बेटी के चेहरों की रेखाओं पर
जो–उभर आती हैं अपने आप असमय ही

मुझे लगता है
अब इन रेखाओं की गहराइयों पर कविताएँ लिखूँ
प्यार पर बहुत हो चुकी कविताएँ !

इन दिनों

वह समय और था
जब लोग प्यार में
जान हार जाया करते थे

ससी–पुन्नु, हीर–राँझा
सोहनी–महिवाल, लैला–मजनूँ
कोई और थे
जो चले गए अपने समय के साथ

यह नई सदी है
दस्तूर नए हैं
यहाँ प्यार
मतलब हँसना
मस्ती करना और भूल जाना
अभी किससे मिले थे।

ज़िंदगी
कितनी कारोबारी हो गई है इन दिनों !

संपर्कः भाटापारा,
जिला–रायपुर
छत्तीसगढ़

कहो रामजी

– डॉ0 शांति सुमन

(डॉ0 शांति सुमन हिन्दी की वरिष्ठ साहित्यकार हैं । अब तक आपके कई नवगीत संग्रह, कविता संग्रह और उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । आप मुजफ्फरपुर के महन्त दर्शन दास महिला कॉलेज से हिन्दी के विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हैं ।)

कहो रामजी, कब आए हो

अपना घर दालान छोड़कर
पोखर–पान–मखान छोड़कर
छानी पर लौकी की लतरें
कोशी–कूल कमान छोड़कर

नए–नए से टुसियाए हो ।

गाछी–बिरछी को सूनाकर
जौ–जवार का दुख दूनाकर
सपनों का शुभ–लाभ जोड़ते
पोथी–पतरा को सगुनाकर

नयी हवा से बतियाए हो

वहीं नहीं अयोध्या केवल
कुछ भी नहीं यहाँ है समतल
दिन पर दिन उगते रहते हैं
आँखों में मन में सौ जंगल

किस–किस को तुम पतियाए हो

जाओगे तो जान एक दिन
बाजारों के गान एक दिन
फिर–फिर लौटोगे लहरों से
इस इजोत के भाव हैं मलिन

अभी सुबह से सँझियाए हो ।

संपर्कः 36, ऑफिसर्स फ्लैट्स,
जुबली रोड, नॉदर्न टाउन
जमशेदपुर, झारखण्ड

हाँ मैं औरत हूँ

– डा0 मधुरिमा सिंह

हाँ मैं औरत हूँ
एक महावृक्ष
गमले में उगा हुआ
सज्जाकक्षों में सजा हुआ
अतिथियों तथा आगंतुको की
जिज्ञासा और प्रशंसा का पात्र
वे भी प्रयोग में लाना
चाहते हैं वह कला
जिससे वृक्षों, लताओं,
फूलों और फलों को
बौना बनाकर
अन्तः कक्षों को सजाया जा सके

मेरे स्वामी बताते हैं
यह कला कोई
दुःसाध्य नहीं
सरल सी प्रक्रिया है
एक जटिल अनुवांशिक दोष की

बस एक छिछले से पात्र में
रोपना होता है एक महावृक्ष
और करना होता है
विकास की प्रक्रिया में हस्तक्षेप
समय–समय पर
छाँटते रहें उसकी टहनियाँ
नोचते रहें किसलय और कोपलें
साथ ही उसकी जड़ें
इस खूबसूरती से काटते
और तराशते रहें
ताकि वह अधिक गहरे न उतरे
किन्तु माटी से उखड़े भी नहीं

मैं देखती हूँ
घर के बाहर
चलती हुई
खुशबू भरी तेज़ हवाएँ
मैं भी
गमले में उगे महावृक्ष की तरह
खुली हवाओं में घूम नहीं सकती
वर्षा में भींग नहीं सकती
क्योंकि मैं औरत हूँ

मुझसे मेरी ज़मीन
और आसामान इस तरह
से छीना गया
कि मुझे पता ही
नहीं चला
और जब तक
मैं यह षड्यंत्र
समझ पाती
बहुत देर
हो चुकी थी
कई युगों के अथक श्रम से
मुझे शयनकक्षों तथा अन्तःपुरों में
कुशलतापूर्वक
सजाया जा चुका था

मेरी जड़ें अपनी
ज़मीन की गहराइयाँ
खो चुकी थीं,
टहनियाँ छाँटी जा चुकी थीं
मेरी अभिव्यक्ति और
संवेदना की कोपलें
नुच चकी थीं
मेरी मुट्ठियों में
मेरा आकाश नहीं
मेरे आकाश का
आभास भर था

हाँ, मैं औरत हूँ
पुरुष की हथेली पर
बौना करके
उगाया गया
एक महावृक्ष

अलाव

– अरुणा घबाना

सर्दी के मौसम में
अलाव तापते लोग
सर्द हवाओं को धोखा देना चाहते हैं शायद
या सर्द हवाओं को काट फेंक देना चाहते हैं ।

सर्दी तो बाहर है
पर एक सर्द आह मेरे अंदर भी है
तभी तो लोकतंत्र का
लोक और तंत्र बिखरा नज़र आता है
शव की शवयात्रा के लिए भी आज आग नहीं
तपिश नहीं
जले कैसे शव जैसे अरमान,
सर्दी का मौसम है
फिर भी जल रहे हैं लोग ।

अलाव के आसपास बैठे लोग
चिथड़ों में अपने को छिपाने की
अनोखी व बेजार कोशिश करते लोग ।

मैं दूर खड़ा सिगरेट के कश पर कश लिए देख रहा हूँ
दुबली–पतली काया वाली वह औरत
एक कटीफटी धोती में कभी खुद को
कभी अपने अधमरे बच्चे को बचाने का प्रयास करती
यों ही मरी सी जा रही है
कभी यहां से खींचती धोती
कभी वहां से खिचती धोती ।

मेरे एक और कश के बाद
खिंचने–खिंचाने में
चिथड़ो में लिपटी औरत
और चिथड़ा फट गया
सर्दी का मौसम है
उसके जिस्म से अलाव तापते लोग !

यादें सिर्फ यादें

– सुषमा लाल

मैंने शाम को अपनी हथेली पर –
सहेज लिया है – मरे दोस्त ।
मैंने देखे हैं अपने खालीपन को –
भरने वाले अनेक दृश्य,
उन्होंने मुझे छुआ है – सहलाया है
मैंने देखा है ढलते सूरज की
किरणों को,
पानी पर बिछलते हुए,
उसके गीलेपन ने मुझे
भिगोया है – मेरे दोस्त ।
मैंने देखें हैं – सूने, सपाट खेत ।
ताड़ और खजूर के पड़ों ने –
मुझे बुलाया था,
उनकी आवाज मैंने सुनी थी –
और जानते हो – मेरे दोस्त !
विशाल नदी के,
साँस लेने की
आवाज़ भी मैंने सुनी है ।
हवा की ठंडक
ने मुझे कँपकँपाया है –
क्षितिज की सीमाओं को,
मेरी आखों ने घेरा है,
मेरे मन ने
उसमें पड़ाव डाला है–
लेकिन मेरी देह को
उस पड़ाव ने
निष्कासित किया,
उस क्षण को छूकर
मैं आगे बढ़ गयी,
मैंने शाम को अपनी हथेली पर
सहेजा है– मेरे दोस्त,
देखो फूंकना नहीं,
कहीं उड़ न जाये ।
अथाह पानी ने मुझे
खींचा था – अपनी ओर
उसके मौन निमंत्रण को
मैं टाल न सकी,
फिर साड़ी घुटने तक उठा कर,
पानी में मैं जा खड़ी हुई,
उस पानी की गरमाहट
ने मुझे सुख दिया,
मैं भीग गयी,
हवा में तिरता आँचल
मेरे काबू से बाहर –
हो गया
शायद वो भी छूना
चाहता था – नदी की लहरों को,
मैंने शाम को अपनी
हथेली पर,
सहेज लिया है – मेरे दोस्त ।

संपर्कः 1611, मैगनम टॉवर
दूसरी क्रास गली,
लोखंडीवाला काम्प्लेक्स
अंधेरी (प.) मुंबई– 53

बिठाई जायेंगी परदे में बीवियाँ कब तक,
बने रहोगे तुम इस मुल्क में मियां कब तक।
अकबर इलाहाबादी

बेटी

– अनु मित्तल

आज ऐसी कहानी सुनाने चली
बेटियों की दशा मैं बताने चली
बेटियों को समझे जो बोझ यहाँ
भेद उनके दिलों का मिटाने चली

एक नन्हीं कली जब आँगन में खिली
सबकी आँखों का बनके सितारा पली
दिल भी झूमा है जिसकी सुनके हँसी
देख के जिसको मन की बगिया खिली

पापा, ताता कहके बुलाती कभी
गुड्डे, गुड़ियों के ब्याह भी रचाती कभी
गिरके हँसती हँस के रुलाती कभी
नन्हें कदमों से आँगन सजाती कभी

पढ़ने के लिए, कॉलेज जाती कभी
कैसे पल–पल में होती है बेटी बड़ी
बेटियों के बिना सूने सब पर्व हैं
जिनके बेटी नहीं, जानते ये दर्द हैं

कैसे आ पाती सजने सँवरने की घड़ी
माँ बाप के लिए है ये परीक्षा कड़ी
जिसको देखा है हर पल नजर ने सदा
कैसे कर पाएगें कल हम उसको विदा

ऐसे प्यारे दिल से कैसे कोई नफरत करे
क्यूँ पराया धन उसे दिल का बोझ कहे
ऐसे मासूम पर कोई सितम क्यूँ करे
दिन की रोशनी में क्यूँ अँधेरा करे

संपर्कः 1506, भगवान पुरी,
गढ़ रोड, हापुड़

युग परिवर्तन

– कौशलेन्द्र सिंह 'राष्ट्रवर'

आज प्रबल है राष्ट्र वेदना दुष्टों का बढ़ता व्यापार ।
नहीं दीखता संबल कोई कौन करे जड़ता संहार ।।

धर्म अंश विध्वंस हुआ है कंस रहा सिर पर ललकार ।
कुन्द हुई मानवीय वेदना आर्त्त द्रोपदी रही पुकार ।।

अधिकारों की मांग बढ़ गई कर्तव्यों का पड़ा अकाल ।
कौन राष्ट्र निर्माण करेगा उच्च करेगा माँ का भाल ।।

हे मानव के राजहंस क्यों बने विकृति के अनुगामी ।
विस्मृत निज कर्तव्य भटक कर बने कुटिलता के स्वामी ।।

दिव्य शक्ति सम्पन्न देव बन जगती में अवतार लिया ।
लेकर मानव रूप दिव्य मानवता का विस्तार किया ।।

आज उसी नर रूप दिव्यता का खुद अपमान किया ।
क्या भौतिक अस्तित्व लब्धिता पूर्ण स्वयं को मान लिया ।।

अभी बहुत कर्तव्य शेष हैं करना मानवता पालन ।
जगत गुरु बनकर करना है परम्परा का अनुपालन ।।

दिव्य पुरुष बन राष्ट्र जगाना लक्ष्य तुम्हारा सदा रहा ।
राष्ट्र प्रेम में बने 'राष्ट्रवर' युग परिवर्तन सदा रहा ।।

नैतिक मूल्यों का संरक्षण और राष्ट्रीयता बनी रहे ।
सत्यमेव जयते भारत की परम्परा यूँ बनी रहे ।।

तभी बन्धुवर पूर्ण बनेगा सत्य और मानव दर्शन ।
माँ का भाल उच्च तब होगा सत्य बने ''युग परिवर्तन'' ।।

संपर्कः मोहल्ला– राधानगर
निकट बिलग्राम चुंगी
हरदोई, उत्तर प्रदेश

सरदार तुक तुक का निमंत्रण

– सरदार तुक तुक

इस बार हमने सोचा मूर्ख दिवस धूमधाम से मनाते हैं
भारत के सारे विद्वानों को अपने घर पर बुलाते हैं
सो पन्द्रह सदस्यों का आयोग बिठाया
जो ये बताये कि किसे जाये बुलाया
आयोग का अध्यक्ष बाबू भाई को बनाया
बाबू भाई इस कहानी के नायक हैं
पिछले दस साल से क्षेत्र के विधायक हैं
आयोग ने तय किया कि निमंत्रण उसी को दो
जो एक बार भी बेवकूफ न बना हो
आयोग के सदस्य मुरारीलाल काज़ी थे
इस बात से बिलकुल नहीं राज़ी थे
कहने लगे इस तरह तो मेहमान बहुत बढ़ जायेंगे
दो करोड़ तो केवल नवजात शिशु आयेंगे
ये सुन के बाबू भाई भड़के
बोले शिशु छोड़ो नहीं आयेंगे 18 साल तक के लड़के
क्या तुम्हारी बुद्धि को ग्रहण लगा है
इस देश के बच्चों को तो हमने पहले ठगा है
बेच दी है अर्थव्यवस्था, बेच दिया है कारोबार
मंहगी कर दी शिक्षा, कम कर दिये रोज़गार
करोड़ों का कर्ज़ा, आरक्षण की मार
क्या देखते नहीं हो समाचार
अब मिश्रा जी आप ही बताइये
बेवकूफ बनाने के लिए कुछ और चाहिये
मिश्राजी बोले सर नारियों के बारे में क्या विचार है
उनको तो दिये ढेर सारे अधिकार हैं
सारे आदमियों को बेवकूफ बनाती हैं
आरक्षण का सबसे ज्यादा लाभ उठाती हैं
इतना सुनते ही बाबू भाई हुए तीखे
गला फाड़ कर ज़ोर से चीखे
मिश्रा मत बोल ऐसा तेरे को लगेगी हाय

हिंदुस्तान में मिला है कभी नारी को न्याय
आज की नारी को आफिस भेज़ते हो तो जाती है
खुद के लिए नहीं तुम्हारे लिए कमाती है
दिनभर आफिस में खटती है, फिर घर जाके खाना बनाती है
अधिकार के नाम पर दुगुना काम कराते हो
खुले आम नारी को बवकूफ बनाते हो
इतना सुन के मुरारी लाल फटे
बोले सीधे कहिये न्यौता नेताओं को बंटे
अब बाबू भाई के रूख में नर्मी आई
बोले आप गलत समझ रहे है मुरारी भाई
हमें कभी साथी बेवकूफ बनाते हैं, कभी कार्यकर्ता
कभी पार्टी बेवकूफ बनाती है, कभी कर्ताधर्ता
कई बार तो पैसे दे के टिकट नहीं मिलता
छवि के नाम पर तो पत्ता तक नहीं हिलता
क्षेत्र में किये काम का नहीं कोई मोल है
फिल्म स्टार के सामने सब गोल गोल है
कई बार नकली वोट पड़ जाते हैं
कई बार असली गिने नहीं जाते हैं
हम धोखा देते कम हैं, कहीं ज्यादा खाते हैं
इसके बाद आयोग ने हर वर्ग, धर्म, जाति
निकाय, समुदाय, व्यवसाय पर किया विचार
पर सब बेकार
अन्ततः हमें समझ में आया, ऐसा विद्वान नहीं जायेगा
पाया
पर तैयारी पूरी है, मूर्ख दिवस मनाना है
निमंत्रण देता हूं, आप सब को आना है

(सरदार तुक तुक मुंबई स्थित निकलल पिरामल इंडिया लिमिटेड कंपनी के मानव संसाधन विभाग में उप महाप्रबंधक पद पर कार्यरत हैं ।)

संवेदना के स्वर

– अखिलेश त्रिवेदी 'शाश्वत'

प्रिय !
कहो मत, चुप रहो
किससे कहोगे ?
कौन सुनता है
किसी की वेदना रुककर
कौन समझेगा
तुम्हारी सिन्धु–सी गहरी
सघन संवेदना के स्वर
दर्द की सम्पत्तियाँ मत बाँट
जो बढ़ा जाए उसे मत डाँट
प्रेम, श्रद्धा, सुख सभी दायित्व हैं
हृदय की हर खाइयों को पाट
याद रखना तुम
स्वयं की
सभ्यता प्रियवर !
कौन सुनता है किसी संवेदना के स्वर...
मन अधिक बोझिल बने
मुझको सुनाना, मैं सुनूँगा
यातनाओं से सुपरिचित हूँ
सुनाना, मैं सुनूँगा
शब्द माला में पिरो पीरें सयानी
किसी सुन्दर गीत की
रचना करुँगा ।
जग हंसेगा बस हंसेगा
छलावा बोकर
कौन सुनता है किसी संवेदना के स्वर...
समय पल पल बदलता है
आश रखना,
धैर्य का सम्बल
सदा ही पास रखना,
दुखों के बादल छँटेंगे
मिलेगा सुख वर
बाद पतझड़ के वसन्त,
विश्वास रखना,
गरल का करना दमन
प्रिय ! अमृता बनकर
कौन सुनता है किसी संवेदना के स्वर...

संपर्कः 6, प्रभातपुरम राजाजीपुरम
लखनऊ – 226017

टूट गये हैं सारे बंधन

– श्रेयस्कर गौड़

टूट गये हैं सारे बंधन,
बिखर गई भावों की माला
जैसे मदिरालय में पीकर,
तोड़ दिया मधुरस का प्याला

घुँघरू में से आवाजों ने बाहर आना बन्द कर दिया,
पीड़ा भी मुँह खोल न पाये ऐसा खरा प्रबन्ध कर दिया ।
देख पा रहा हूँ ये दुनिया पर दिल माँगे तनिक उजाला,
बिखर गई भावों की माला .....

मैं चाहे कुछ भी कह दूँ पर उसका भाव समर्पण ही था,
मैं निष्ठुर बन बैठा फिर भी उसके मन में अर्पण ही था
शायद मेरी किस्मत ही थी खो बैठा वो प्यार निराला,
बिखर गई भावों की माला .....

लाख मनाया उसने फिर भी मैंने रिश्ता कहाँ निभाया,
मद में अंधा होकर अपनी परछाई को छूटा पाया
मन की चिड़िया मुझसे पूछे हाय ये तूने क्या कर डाला
बिखर गई भावों की माला .....

संपर्कः श्री कृष्ण विहार, चर्च के सामने,
मेरठ रोड, हापुड़– 245101

लबों पे उसके कभी बद्दुआ नही होती
बस एक मां है जो मुझसे खफ़ा नहीं होती
मुनव्वर राना

कुँअर बेचैन को पारस शिखर सम्मान

29 दिसम्बर, 2011 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पारस–बेला न्यास की ओर से उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान के यशपाल सभागार में पारस–बेला स्मृति समारोह–2011 का आयोजन किया गया । यह समारोह प्रत्येक वर्ष बाबू जी स्वर्गीय पारसनाथ पाठक 'प्रसून' तथा माताजी स्वर्गीय बेला देवी की स्मृति में आयोजित किया जाता है । बाबू जी स्वर्गीय प्रसून शिक्षाविद् होने के साथ–साथ एक ख्यातिप्राप्त रचनाकार और कवि भी थे । साठ व सत्तर के दशक में 'प्रसून' जी की रचनाएं हिन्दी की कई पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। उनके द्वारा कलमबद्ध रचनाओं को 'स्वर–बेला' काव्य संग्रह शीर्षक से प्रकाशित किया गया है ।

माता जी स्वर्गीय बेला देवी बाबू जी स्वर्गीय 'प्रसून' की जीवन संगिनी होने के साथ–साथ उनके जीवन संघर्ष की साक्षी भी थीं। उन्होंने बाबूजी के व्यक्तित्व सृजन में महती भूमिका निभाई । वे मानवीय मूल्यों की मर्मज्ञ थीं। वे जहां किसी जरूरतमंद की सहायता करने में कोमल थीं वहीं किसी गलत या अन्याय का साथ देने वाले का दृढ़ता से विरोध भी करती थीं । उन पर यह उक्ति चरितार्थ होती है– ''ब्रजादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि ।''

पारस–बेला न्यास की ओर से आयोजित इस स्मृति समारोह में देश के सुप्रसिद्ध रचनाकारों को भी सम्मानित किया गया । वर्ष 2011 का पारस शिखर सम्मान प्रख्यात गीतकार और नवगीतों के पुरोधा कवि डॉ0 कुँअर बेचैन को दिया गया । इसी तरह इस वर्ष का स्वर बेला युवा सम्मान उत्साही युवा कवि डॉ0 प्रवीण शुक्ल को दिया गया । डॉ0 प्रवीण शुक्ल एक बहुमुखी प्रतिभा है और काव्य लेखन में देश के इने–गिने सिद्धहस्त कवियों में से एक हैं । अब तक उनकी कई काव्यकृतियां प्रकाशित हो चुकी है । इस वर्ष अर्थात् वर्ष 2011 में माता जी स्वर्गीय बेला देवी की पावन स्मृति में एक नये सम्मान बेला शिखर सम्मान की शुरूआत की गयी और पहला सम्मान देश की यशस्वी कवियित्री डॉ0 सुमन दुबे को प्रदान किया । डॉ0 सुमन दुबे मौजूदा समय की हिन्दी काव्यमंच की ऐसी नेत्री हैं जो अपने सरस, सुरीले काव्य पाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

सम्मानित किये गये उपरोक्त सभी रचनाकारों को पारस–बेला न्यास के अध्यक्ष डॉ0 एल. पी. पाण्डेय ने प्रतीक चिह्न स्वरूप सरस्वती की प्रतिमा और शाल भेंट की । न्यास के अन्य सदस्यों सर्वश्री अनिल कुमार पाठक, अभिमन्यु कुमार पाठक व अरुण कुमार पाठक ने भी सभी सम्मानित कवियों को गुलदस्ता भेंटकर उनका जोरदार स्वागत किया ।

पारस–बेला स्मृति समारोह के अंतिम चरण में विभिन्न कवियों द्वारा यशपाल सभागार में काव्य पाठ कर एक अनूठा समा बांध दिया गया। काव्यपाठ की शुरूआत युवा और जोशीले कवि अभय निर्भीक ने की। इसके बाद मुकुल महान ने कविता पाठ किया। तत्पश्चात डॉ0 प्रवीण शुक्ल ने देश के विभिन्न कवियों के अंदाज की नकल करते हुए एक हास्य कविता प्रस्तुत की जिसने श्रोताओं को खूब हंसाया । इसके बाद डॉ0 सुमन दुबे ने स्त्री के विविध रूपों का बखान करते हुए एक गीत प्रस्तुत किया । कार्यक्रम के अंत में डॉ0 कुँअर बेचैन ने काव्य पाठ कर सभी श्रोताओं का मन जीत लिया । उनकी ये पक्तियां काफी सराही गयीं –

किसी भी काम को करने की चाहें पहले आती हैं
अगर बच्चे को गोदी लो तो बाहें पहले आती हैं
हरेक कोशिश का दर्जा कामयाबी से भी ऊंचा है
कि मंजिल बाद में आती है, राहें पहले आती हैं

कवि सम्मेलन का संचालन डॉ0 सुनील जोगी ने किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ0 प्रेम शंकर ने की । कार्यक्रम के अंत में पारस–बेला न्यास के अध्यक्ष डॉ0 एल.पी. पाण्डेय ने कार्यक्रम में पधारे सभी विद्वत्जनों, साहित्यकारों, प्रशासनिक अधिकारियों, पत्रकारों और गणमान्य व्यक्तियों और आगन्तुकों को धन्यवाद ज्ञापित किया । समारोह में पारस–परस पत्रिका के सम्पादक शिवकुमार बिलग्रामी भी उपस्थित थे।

पारस–परस प्रतिनिधि

आज
३० दिसम्बर, २०११ (५)

पारस बेला स्मृति समारोह-२०११ में सम्मानित कवियों के साथ हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डा... व डा.अनिल पाठक।

... माँ-बाप से बढ़कर कोई भ...

लखनऊ, गुरुवार (आज समाचार सेवा)। सम्मान समारोह में शोर्य रचनाकारों के कंठ से आज काव्यधारा प्रवाहित हुई। छन्द, मुक्तक, गीत और गजल के पुट। सब मिलाकर रची गयी पंक्तियों को तालियों की शाबासी दी जाती रही। रचना के जरिये माँ का गुणगान किया गया। सभी विमर्श की छाया भी समारोह का अहम हिस्सा बनी। मशहूर साहित्यकारों को पारस बेला न्यास ने मंच दिया। हिंदी संस्थान के ... सभागार में श्रोताओं ने रचनाओं की दाद दी। कवियों ने ... की पीठ भी खूब थपथपायी। स्वर्गवासी ... पाठक 'प्रसून' और माता बेला देवी की स्मृति में यह आयोजन उनके पुत्र डा.अनिल कुमार पाठक ने किया। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और साहित्यकार डा पाठक ने आज कवियों को तीसरी बार मंच दिया। वर्ष २०११ के पारस-बेला स्मृति समारोह की हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डा.प्रेम शंकर ने ...

कवि डा.प्रवीण शुक्ल को तीसरा स्वर बेला युवा ... प्रथम बेला शिखर सम्मान डा.सुमन दुबे को प्र... अपनी उपलब्धियों के लिये, अभय निर्भीक, ... जोगी को भी सम्मानित किया गया।

पारस-बेला स्मृति समारोह में सजी साहित्य की संध्या

मंदिर की मूर्तियों से दुआ मांगने वाले माँ-बाप से बढ़कर कोई भगवान नहीं है पढ़ी। शिखर सम्मान से नवाजे गये डा. कुंवर बेचैन ... हर कोशिश का दर्जा, कामयाबी से भी ऊंचा है कि मंजिल बाद में आती है, राहें पहले आती हैं ...

पायनियर
शुक्रवार, 30 दिसम्बर, 2011

डॉ. कुंवर बेचैन, प्रवीण शुक्ला व सुमन दुबे को सम्मान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कवि स्व. पारस नाथ पाठक 'प्रसून' एवं स्व. बेला देवी की

पारस-बेला स्मृति सम्मान-2011 का हुआ आयोजन

लखनऊ, 30 दिसंबर 2011 दैनिक जागरण । 5

हर कोशिश का दर्जा कामयाबी से ऊंचा

पारस-बेला स्मृति समारोह

• डॉ.कुंवर बेचैन को मिला पारस शिखर सम्मान

लखनऊ, 29 दिसंबर (जागरण संवाददाता) : प्रसिद्ध कवि एवं शिक्षाविद् पं.पारसनाथ ... व स्व. बेला देवी स्मृति दिवस समारोह में गुरुवार को प्रख्यात कवियों को सम्मानित किया गया। हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ.प्रेम शंकर की अध्यक्षता में हुए समारोह के दौरान कवियों ने रचनाएं पेशकर सभी का दिल जीत लिया। पारस-बेला न्यास द्वारा हर वर्ष दिया जाने वाला तीसरा पारस शिखर सम्मान प्रख्यात गीतकार डॉ.कुंवर बेचैन को दिया गया जबकि युवा कवि डॉ. प्रवीण शुक्ला को स्वर बेला युवा सम्मान दिया गया। इसके अलावा पहला बेला शिखर सम्मान कवयित्री डॉ. सुमन दुबे को प्रदान किया गया।

दिल्ली से आए प्रसिद्ध कवि डॉ.सुनील जोगी के संचालन में शुरू हुए समारोह की शुरुआत ...

हिंदी संस्थान में आयोजित समारोह में सम्मानित हुईं विभूतियां

कोशिश का दर्जा कामयाबी से भी ऊंचा है कि मंजिल बाद में आती है राहें पहले आती हैं' सुनाकर श्रोताओं की तालियां बटोरी। पारस-बेला न्यास के अध्यक्ष डॉ.एलपी पांडेय की मौजूदगी में अभय निर्भीक ने 'आयतें कुरआन ...

स्वाभिमान पर आधारित रचना 'इंसान क्या जिसमें कि स्वाभिमान नहीं है, वह गीत क्या है जिसमें कोई तान नहीं है' सुनाकर सभी का दिल जीत लिया। मुकुल महान व डॉ.प्रवीण शुक्ला ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से ... अपनी ओर खींचा। समारोह में ... डॉ.अनिल कुमार पाठक, ... पाठक व अरुण कुमार पाठक के ... आयुक्त प्रताप सिंह भदौरिया ...

सहारा

पारस शिखर सम्मान से सम्मानित कवि कुंवर बेचैन, स्वर बेला युवा सम्मान से सम्मानित प्रवीण शुक्ल के ... सम्मान से सम्मानित डा. सुमन दुबे हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डा. प्रेमशंकर के साथ।

हिन्दुस्तान लखनऊ •शुक्रवार •30 दिसम्बर 2011 04

सहारा

अमर उजाला
लखनऊ, 30 दिसंबर 2011

गीतकार कुं... पारस शिख...

अमर उजाला ब्यूरो

... पारस बेला न्यास की ...

शिक्षाविद् व कवि पारस... गुरुवार को पारस-बेला... इसमें पारस शिखर सम्... व्यंग कवि डॉ.प्रवीण शुक... कार्यक्रम में वरिष्ठ पीसीए... डॉ. सुनील जोगी, डॉ. एल...

कुंवर बेचैन को पारस शिखर सम्मान

स्वतंत्र भारत लखनऊ,

स्मृति समारोह में ...

लखनऊ (स.)। पारस बेला न्यास के तत्वावधान में आज हिन्दी संस्थान के यशपाल सभागार में पारस नाथ पाठक एवं बेला देवी की पुण्य स्मृति में आयोजित 'पारस-बेला स्मृति समरोह-2011' में अनेक बिभूतियां सम्मानित हुईं।

स्व. प्रसून की पुण्य स्मृति में तृतीय 'पारस शिखर सम्मान' सुप्रसिद्ध गीतकार डा. कुंवर बेचैन को तथा तृतीय 'स्वर बेला युवा सम्मान' सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग युवा कवि डा. प्रवीण शुक्ला को प्रदान किया गया। स्व. बेला देवी की पुण्य स्मृति में प्रथम 'बेला शिखर सम्मान' डा. सुमन दुबे को प्रदान किया गया।

समारोह में डा. कुंवर बेचैन, डा. प्रवीण शुक्ला, डा. सुमन दुबे, अनिल चौबे, अभय निर्भीक, मुकुल महान तथा डा. सुनील जोगी ने काव्य पाठ किया। समारोह में काव्य पाठ क... हुए, डा. कुंवर बेचैन ने कहा-

हर एक कोशिश का दर्जा कामयाबी से भी ऊंचा है,
कि मंजिल बाद में आती है, रा... पहले आतीं हैं।

डा. सुनील जोगी की पंक्तियां थीं-

इंसान क्या जिसमें कि स्वाभिमा... नहीं है,
वह गीत क्या जिसमें कि को... तान नहीं है।
मंदिर की मूर्तियों से दुआ मांग... वाले,
मां-बाप से बढ़कर कोई भगवा... नहीं है।

डा. सुमन दुबे ने इन पंक्तियों ... जरिये अपनी अभिव्यक्ति को स... विमर्श से जोड़ते हुए कहा-

दान लें लक्ष्मीबाई व इन्दि... बनकर,

हिन्दुस्तान लखनऊ •शुक्रवार •30 दिसम्बर 2011 04

शिक्षाविद् व कवि पारस नाथ पाठक प्रसून और बेला देवी की पुण्य स्मृति में ...

... सुनील जोगी ... कि स्वाभिम... क्या जिसमें ... मंदिर की मूर्ति... वाले, मां-बाप ... भगवान नहीं है' ... माता-पिता की महत्ता पर प्रकाश डाला। वहीं सुमन दुबे ने सुनाया- 'मां बहन प्रेमिका का रोल बदल सकती है, मीठे लगते हों वही बोल बदल सकती है'। वहीं, अभय सिंह निर्भीक, मुकुल महान, अनिल चौबे ने भी काव्य पाठ किया। न्यास की ओर से एल. पी. पाण्डेय एवं अनिल कुमार पाठक ने विचार व्यक्त किए।

इन्साफ की डगर पे

–शकील बदायूँनी

इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चल के
ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्ही हो कल के

दुनिया के रंग सहना और, कुछ ना मुँह से कहना
सच्चाइयों के बल पे, आगे को बढ़ते रहना
रख दोगे एक दिन तुम, संसार को बदल के
इन्साफ की डगर पे.....

अपने हों या पराए, सब के लिए हो न्याय
देखो कदम तुम्हारा, हरगिज़ ना डगमगाए
रस्ते बड़े कठिन हैं, चलना संभल–संभल के
इन्साफ की डगर पे.....

इन्सानियत के सर पे, इज्ज़त का ताज रखना
तन मन की भेंट देकर, भारत की लाज रखना
जीवन नया मिलेगा, अंतिम चिता में जल के
इन्साफ की डगर पे.....

उस घर के बच्चे मीठी निंदिया सोते हैं
जिस घर में उनके दादा दादी होते हैं
उस घर के बच्चे हँसते हैं ; कब रोते हैं ?
जिस घर में उनके दादा दादी होते हैं

शिवकुमार बिलग्रामी

पारस-बेला स्मृति समारोह 2011
की कुछ झलकियाँ

पारस-बेला स्मृति समारोह 2011
की कुछ झलकियाँ